

अथ अनेक वर्ग नाम ॥ अवशुन अनेक वर्ग की वाता ॥ नाम एक ओषध वा
 ताना भगुड ॥ चीहूँ ॥ आवला अमृत ता ऐत वर्ग ॥ अनंताना म चिरायता जानो ॥ नील दू
 नलांगली मानो ॥ हेमवती स्वेतदूबधानी ॥ साहूँ ससमूल चूके मानी ॥ शतपद्या वंसदू
 वी पुन जानो ॥ सहस्रवेधौ अन्न वेत मानो ॥ दोहरा ॥ अकसूरी होंग पुन असे स जतू जानो
 एक नाम ओषध वोह सो पुन क ह्यो वधान ॥ बो ॥ सदा स्वेत अक पुन नाडं ॥ ताम्र पुष्पा धाती की
 नाडं ॥ चंपक नाग के सर कुकै ॥ कूक भो देवदार कूटल है ॥ रक्त सार रक्त चंदन नाडं ॥ अंजन सो
 चिरवताडं ॥ दुर्ग सी कंटकारी यवा सा ॥ मुद्ग पर्णी क कं ही पुन वासा ॥ असे वोह ओषध को जेदू ॥
 ओषध एक वोह जेद सो पीछे दर्शवताय ॥ गुन ओ ओ गुण वोह विधि कहे ज सकु ह पाय ॥ सोरठ ॥
 क लोथोरा विचार अनेक अर्थ पूर्ण प्रयो ॥ जीव देह संसार सो पुन कहं वनाइ कै ॥ अथ देह वर्ग ना
 म वर्ग ॥ अवशुन कहं देह की वाता ॥ जे से विधि देह रची विधाता ॥ देह सूरी अंग पुन नाडं पतनु व पु अ
 रयो नीज वताडं ॥ देह जेद पुन देह प्रकारा ॥ जो निज एक अजो निज वी चार ॥ अजो निज तीन
 प्रकार सें होइ ॥ जो निज एक जे देह सो होइ ॥ स्वेद ज अंड ज उडू ज जो नो ॥ जो निज मानव
 पशु पुन मानो ॥ दोहरा ॥ स्वेद ज होइ प्रस्वेद तें ॥ अंड ज अंडे माह ॥ उडू ज से डे जो वस्त है ॥
 जो निज पशु नर ग्राह ॥ अथ स्वेद जेव

६०

ज१

श्रीनारायणप्रभुन कहं स्वेद स ज वा ता । जैसें भाव प्रका विष्पाता ॥ स्वेद ज नाम प्रस्वेद प मे वै । तनु ज
लीड स गती से वै ॥ स्वेद ज सो इत न जंतु हो ॥ जूं नाम यं का कह को ॥ ओ पुन पीसू को रिन ता वै ।
ओर वो हत जग स्वेद ज भा वै ॥ सद अंग द्या ती हो ॥ इर भा ती ड प ज त न ही सो ॥ दोहरा ॥ स्वेद ज
को मल अंगरी पु या का वो ह पु न जे द ॥ स्वेद ज मो व ल दा य पीसू पु न इ ह जे द ॥ अथ गंड ज व र्ण न ॥
अंड ज मो ऐ ते जी व जौ नो । मै अव स ज ग ति क हं व थानो ॥ पंछी जाल ग पर जो धर ॥ ओ वो ह
जल विच ते रह हो ॥ मछी मायो सां प पु न ब प की । ब्राह्मी म क ड जो क पु न त प की ॥ जो ह सां ड
पु न विर ध ट सो ॥ ऐ पु न अंड ज यो नी हो ॥ ओर ऐ क ग ति जे द व ता ड ॥ जैसें भाव प्रका स तें
पा ड ॥ दोहरा ॥ जिह के क री हों गु पैं सो ॥ जो नी अंड ज जान ॥ जिह के अव न हो वा हर सो
३ जो नी ज मान ॥ अथ ड डु ज न म गु रा ॥ ड डु ज जे द व तां बा तां ड ॥ जैसें आ दि जं थ तें पा ड ॥
ड डु ज न म या का पु न कहै । जो कुछ धरा जी स मो ओ हे ॥ तामो नू म जो पर हीं जा ॥ स्पाम
की डे दृष्ट प या न ज सो ॥ स्पाम की डे नु ल ल क ना ड ॥ स डे जल मो ता ह व ता ड ॥ दोहरा
मा स मो स्वे त पी त पु न फल मो पी त पु न लाल ॥ स्निग्ध व स मो र ते स्पाम मिष्ट य ल द्यो
अथ जो नी ज व र्ण न ॥ अव श्यु न जो नी ज भा व व ता ड ॥ जैसें भाव प्रका स तें पा ड ॥ जो नी
नाम ता ह का कहै ॥ गर्भ विच सो दे ह सो ग्रह ॥ जो नी ज ऐ ते जी व हो ॥ म

रेणुका च नीया मोले ठीले ॥ नंगरे छीं कावी जैं दो ॥ दो ॥ सज प्रिया चूरी पुन
की जैं ॥ माल कां गणी तेल पुट दी जैं ॥ साते पुट कां गणी तेल दी जैं ॥ वोहर सुकाय आ
पतवली जैं ॥ **दोहरा ॥** तीन टंक नित पा ॥ गज दूध कै संग ॥ वातुल वस्तु छुटि
दे लाल रोग हो जंग ॥ **अथ उनमद रोग लक्षण ॥** आव सुन डुन मद रोग वर्त ॥
विष्ट पृष्ठि न्मत बोरा ना ॥ तिन तिहु दोष ज्ञ से हो ॥ जे कै संन पात सो सो ॥ रे
क मादिक वस्तु वोह पा ॥ ऐक चित्त के दुष सो हो ॥ जारे ॥ छुह उनमद से से सज
कहे ॥ लक्षण सज के निन सार हो ॥ कै ५ तेक पंडित से कह हो ॥ दुद दोष सो वोह
गत अह ॥ **दोहरा ॥** निन निन लक्षण कह ॥ सुनो अव न मन ल ॥ गोष दल
क्षण सज कह ॥ आव प्रका सजे पा ॥ **अथ वात उनमद लक्षण पूर्व रूप ॥** अ
वष्टु ने वाय उनमद रोग जे से ॥ मार्ग वो र वाय जाय जे से ॥ बुध स्थान जाय बु
ध सो मीली ॥ घर वो र जाय आपन घर नली ॥ बुध चला २ वाय जो द ॥ विष्टा
हार विहार सो ग ॥ ता सो वोह दोषै कर थापै ॥ मन विचलो बुध वाय संग जा
ये ॥ मिथ्या हार विहार जो कीयो ॥ ता को संस वाय गह लियो ॥ **दोहरा ॥** जे सली
लि ए वाय जो र हो ॥ बुध घरै जाय घाय ॥ ता स वाय उनमद हो ॥ जे से विष्ट वैद्य कह ॥

वपु
को स०

अथ वायु त्रिदल छ ए॥ वायु त्रिदल छ ए॥ सै जाइ॥ दूर वायु त्रिदल
बुद्धि मिले॥ वोहत वकै सो वोहत पुन छावे॥ वोहत ह सै वोहतै पुन गावे॥ वो
हत रोवै सो वोहत फीराइ॥ महरत एक न ठाव ठहराइ॥ जो मोह सो कह कू
छ चाहे॥ सो हर ह जाय सो रवता है॥ देह जान आपन न हो जानै॥ चोटल जे
सो मन न हो मानै॥ **दोहरा॥** हीया छिंदर दुष तेर है॥ मुल रहै दोउ ठाई॥ रात
दो सवता रहै॥ वात त्रिदल मय २ ह जाइ॥ **अथ वात त्रिदल कुठ पाइ॥** सिर सो फूल
रखी जु डली जै॥ रफला सिर सज डतै सै दी जै॥ हल दी देव द्वार मंजी टैले॥ रकु
टा ही गुंजल सी ज डे॥ वल डंडी बंही जु ड जाँने॥ चीता स्याम निरगुं डी ठानै
हिं गुंजल लो सो सजना ही॥ सो रकुट सज बूँछ करे॥ कै वकरी मूत मोहि छ सरा
षै॥ पुन छाए अर डते ल डारे॥ दिन २ की सला पी जए॥ सो घट दस टाक छाणी॥ वा
त त्रिदल मतरा जहर॥ सो रवात वोह हा ए॥ **अथ वात त्रिदल कुंछ ता॥** रफला र एका
र कु टाली जै॥ देव द्वार चंदन कुट दी जै॥ विसाला ते जु बल क बल जु ड ले॥ कटे ही
ली दो ताली सपन दे॥ वायु बिंडु ज विसलु जे ज डे॥ पिछ परणी माघ परणी परे॥ के
सर नाग के सर चव डाले॥ सी जालू सो ह जए छीका बाले॥ वा से वकार जे ज डे जु ड ली जे

अरंड जाक कनी ५ र पुन दी जे ॥ दोहरा ॥ सज जोष दसम ले ५ के ॥ दै उज्जाग करे
सो ५ ॥ एक कूजल जे ५ नीर ले ॥ एक कूका थकर सोय ॥ एक जागले जल मो दी जे ॥ अठ
पहर जे जल मल ली जे ॥ एक जाग को काठा करिले ५ ॥ अर्ध पक जल छानि करे ५ ॥ चो
गुण का थचो गुण जले ॥ एक जाग ज उ छ त ते पुव बले ॥ डलिक राहि मंदा जि पकावे ॥
जल काठा जले छ तर हावे ॥ त वडितारि छ त सो वो हली जे ॥ टाकती न पान साधे दी जे ॥
दोहरा ॥ मंडल एक लोषा ५ ॥ वातल वस्त सज छुडि ॥ उन मंदरो जे छटे ॥ वात उन मंद ह
र व्याधि ॥ अथ पित्त उन मंद ल छुए ॥ अ वपु न पित्त उन मंद रोग ज्ञा से ॥ जाव प्रकास क
हो जो त से ॥ वाय जंति पित्त को प जो ज्यो ॥ मिथा हर विहार जो कीयो ॥ सो वो ह पित्त को पह
द उठ जायो ॥ मिथा हर विहार चलायो ॥ ही ए दुषत जो दाह वो ह हो ५ ॥ दाह दू म वुच ठा
हल को ५ ॥ तासु संघु द ह देषो ५ ॥ वो ह त वक्त ना र है सो ५ ॥ दोहरा ॥ पित्त ल छुए स
ज देह मो ॥ जो र व के वाय संज पित्त उन मंद सो जा ए ॥ पित्त दोष के ज्ञा ॥ पित्त उन म
द ल छुए ज्ञा से हो ५ ॥ वो ह त क्रोध वो ह ते जे सो ५ ॥ अ जि रहे सी ते न ही व्यापै ॥ दस ५ दी
द सो दार तापै ॥ जो मन सी तल वस्त चाहे ॥ ओं गं गं गं संघ संघ वो ह दाह ॥ मु

को
त०
ग०
दे०
६२
छावैवकै जव जारी। परै द्याइ जसै अति पहरी॥ बुधना सज्जो मन नरमाइ। पि
त संग सज देह दिषाइ॥ दोहरा॥ सजत नत पै रात दिन। मन अचेत निहनाहि। पितल
ए सो वोह वकै पित न मय कहताहि॥ पित न मय कहता॥ सतावरी रसपल
वती सलेइ। रस सो अर्घ्य छत गति दूध पल चोती स डालै। तीना मिलोइ मंदा अति
नाले। अर्घ्य रहै तवरा सुघलेइ। रकुटा हलदत गर पुनि देइ। मिसी छणि यावेल गिरि
लेइ। माले ठीकेले जड कवल देइ। सज कूचूर पत्ते छत डालै। मंदा अति पचाइ छतर
ही सोले॥ दोहरा॥ सो छत टंक चारी नित। मखी पान संग घाइ। पित न मय बेग छटै।
उत मइ ही डिपाव॥ पित न मय कहता॥ सहत तगर मोले ठी दीजे। लाष करै जे जे
लपत दीजे। मंजीठ पाडल वचहि गुलेइ। कंठाइ दोनो सरस्यो पीत देइ। हलद दोनो
कटु की प्रेन फले। रफला रकुटा सिर सो फले। वाय विडग देव दार लेइ। संको
ल गिलोइ सो होत ए देइ। निवछालि जा संग छे डाले। गोष रुमो ये कूट पुन घाले।
दोहरा॥ मुसा कनी बिजु सार। चिता दंती बीज। बेल के थवासा डडै॥ चिरायता सो
फैली न॥ गोष दस नै सम जा गलेइ। गावै काय गावै तुल केइ॥ एक भाज

गोमुर पुन डाले ॥ काय समान तोल के घाले ॥ गडि छत गौ मुत्र सै जाये ॥ सत्रै र
 लाइ कडा हवि च घाले ॥ मंदाग्नि विच ताहि पचावे ॥ सत्र तुल जाइ छतर रह जवे ॥
 सो बह छत ये क दोषा ॥ प्रात साव पुनि वरु ते जाइ ॥ **दिहया ॥** मंडलग कलोषा
 २१ ॥ **पित्त उन्नमद रोग घट जाय ॥** वातुल वस्तु छा डे ॥ अचेत शुचेत होइ काइ ॥ **अथ**
पित्त उन्नमद क काय ॥ सतावरि गिलाइ तुवा साले ॥ अथ वज्र दस मूल ततु दे ॥
 रफला वाय विडंग च व डाल ॥ निवछाल बेल के थ घाले ॥ मुसा कनी अंकोल छाल
 ले ॥ दंती वा सां मोले ठी दे ॥ चंदन क बल के ले तु ड घाले ॥ जाइ जी सो फ घाली
 या डाले ॥ टंक जा ठको काय करे ॥ सहत डालि नित प्रात सो पे ॥ **दिहया ॥** मंडल
 र कलो पित्र ॥ छत जो न सोषा ॥ वातुल वस्तु छा डे ॥ **पित्त उन्नमद जाइ ॥ अथ**
कफ उन्नमद लक्षण ॥ अवशु न कफ उन्नमद रोग असै ॥ अव प्रकास क होत त सै
 वाय प्रकार कफ को प्रजो जयो ॥ मिथ्या हार जो की यो ॥ ते सवाय को पहइ जारी ॥ अ
 से कफ को प्रजो विकारी ॥ ता सो कफ उन्नमद होइ ॥ ते सै वाय पित्त कफ जा दोइ ॥
 ते द्राल गै लाल छुई जारी ॥ वचन स्वल्प देह जाता ॥ **दिहया ॥** कफ दोष सत्र
 अंग हो ॥ बुद्धि जान कु छ नाही ॥ **अथ कफ उन्नमद क चूर्ण ॥** आस गंध पांचो नुन
 ले ॥ अज मोद जीरे दोर कू टाले ॥ मुसा कनी पा डल कर वाला ॥ सण पुष्पी जं
 ने ॥

विहार ११

नाव
प्रका
स०

63

गरे जुड गिलो २ सतैं सहदे वीले २ मि सी जुड जे चोलन न दे २ सत्रै कूटि च
ए करिं ली जे वाही रस छ ह जावना दी जे मुं डी शतावरि जावना सातैं वो
हर मुकाय छो ह पर जाते ॥ दोहरा ॥ घृत सहत सें पा २ ए प्रात सें ह सा ही वा
तुलवस्त सत्र छ डि दे क फ ड न म दै ज्ञा ती ॥ अथ क फ ड न म दै कूटि च ॥ ह कुट मि
गर फ वला जुड ले २ वच क टु की सी र वारी दे २ सीर स फूल सीर सो फूल ली जे
फूल प्रय गु का क ज वा दी जे सत्रै कूट छ ए के ले २ गो मुत्र वि च र्त्त करे २ सा
त दो सलो घर्त्त कर म ले ॥ गुत्रा सम दो गुट का करे ॥ चूर्ण वो ह सा २ जे ज न २ ह
करे ॥ क फ ड न म द न जी दू छ हरे ॥ दोहरा ॥ चतुर्थ रती ए ज्वर हरे ॥ क फ ड न म दै ज्ञा
य ॥ न जी हरे दो छे छे टै उ त म २ ही उ पा २ ॥ अथ र दो छे स न पा त उ त म द ल छ ए ॥
अव मुन सें न उ न म दै जे सै ल छ ए जो प द व र्त्त त जे सै ॥ वात पित क फ दोष हो २ जा
री ॥ विकट नै न रो वै ह सतारी ॥ वो ह घा वे वो ह व के दी न रा ती ॥ दे ह न ज्ञा न वो र बिष्वा
ती ॥ क व हु गा वे क व हु रो व न ला जे ॥ क व हु व के क व हु च प म नु स जे ॥ क व हु कूट
क व के तो हि ॥ ह दो छे उ त म द सो ज्ञा ए ॥ कहो वै द्य सत्र या हि ॥ अथ र दो छे स न
म द कूट ल ॥ ला स जे सिर द सद स ली जे ॥ दो उ उ वा लि पा ए छ ए की जे
म ए पा ए की द ह सिर रह ही ॥ सो २ उ तारि छ ए ले त व ही ॥ द ही पा ए सिर द स
हदा ह वा पै ३ चित्त म म कु छ दा ह न था पै ३ ॥ दोहरा ॥ वात पित क फ दो

ग ३
हो या दे ह पा ३
न र दी ता ही भा ३

पुनः ज्ञानै। सतारिगीलोऽपाणि सिरतीने। तेलठाऽसेरमी ठालीने। तव
जोषदकूटपुनदीने॥ मं सगंधहलदी सोफतने। देवद्वारकटुकी लोदजने॥
दोहरा॥ रे एका मुर्वी कूटले। चंदनमोले ठी डाल। मोथे मूलवतोरले। रासुं जे **म३**
पुनछाल॥ मंजी ठकेले नुडपी रहटीले॥ श्रीकागरदवरकुटां दे॥ जरडसो
हजरे नुडपुनि डाले। एसजकूटके डाहमो छाले। तेलरसे पुनी संगमी लावे। मंदा
मंजि देताहि पचावे॥ सजडल जाहि तेल रहसो॥ तवउतारि छाले वही॥ धावे
तोमसे छतवना॥ तेलवनाथ मंगमर्द॥ **दोहरा॥** मंडल एकलो छतवा॥
तेलवनाथ मलाय। रदीषडिनमदघटे। वरमजी छुं जा॥ **मथसोवडिन**
दलछाए॥ अवमुन सोकडिनमदेवाता। लछाए जोषदकहु विष्णाता॥ अचेतबुधि
विहवलदिनदिने। मंगही नदी सजहीने। छुवाजायदिनदिन सोचे नारी। बुध
बली अति नमक नारी। ठावठावने दी सैतासू। देहजी शी जो माल सजासू॥
मोहसोवके जो मनमै आवे॥ मंगदाह जो मनननीवे॥ **दोहरा॥** रहै अचेतकुछ
नामुने। मुने तो ज्ञानकुछ नाहि। वायलछाए सजदी सै। सोकडिनमदहोताहि

जावपू
कास

७४

अथ सोकठिन मद्य कुठिया ॥ सिराना डीकोरु हरक छावै ॥ लाघ तैल जंग गधूव
मलावै ॥ दिन जे सें जंग तैल मला ॥ लाघ तैल जल ताहिल गा ॥ जो पुनि ज
से ॥ ह जो घद करै ॥ मुनो कहु घने तर जो उचरै ॥ वैलि सत गीलो ॥ सतली ज
व लंड डी मुडी सत दी जे ॥ मोले ठी सतावरी सत पुनिले ॥ जवा से सत जं कोल
सत दे ॥ **दिहय ॥** एते सत पुनिका छले ॥ तव जो घद कर एहि ॥ जे से घने तरिषक
हे ॥ सो सज बर्नत एह ॥ पहल वै सज सत जा गली जे ॥ तापा छे ए जो घद दी जे ॥ आ
वले ताल मघ एली जे ॥ वाय विडंग चीता वच दी जे ॥ सतावरी जो रघू जो चर सले
॥ वैली रुड मुडी रुड दे ॥ हलं दी दो उलो गदाल चीनी ॥ पर रुडी नौ के सर च
बली नी ॥ सजे कूट चूर्ण करली जे ॥ गठि छत सहत सो ज छ एकी जे ॥ **दिहय ॥** मद्य छ
त सें गर लाय के टाक तीन नित प्राय ॥ दूध जात जो रुन करै ॥ सो कठिन मद्य जाय ॥
अथ एते ठिन मद्य ल ॥ अथ पुन ज द्ये ठिन मद्य वता ॥ जे सें जावपू कास
ते पा ॥ चील वीट उलू वीटली जे ॥ मोर पाषवी ट पुनि दी जे ॥ कबु तर नील कंठ वी
टले ॥ हुद हुद मुरगी कुलंग वीट ॥ मन सलत वकी जो हर ताले ॥ मिलाय सजे
रक दो स लोषले ॥ सार्प पीते जो ह पीते माही ॥ धर्ल करै दिन तीन जल ताही ॥ **दिहय ॥**

छे ५ वे

७४

कनीर आकचतूरे ॥ ५ नरसवो ह मलाय ॥ वोहर मर्चटांक सा ५ ॥ जोषात वोरा
हो ५ जाय ॥ मर्चटांक जोका हुकरि पायो ॥ प्रातषात वोरा हो ५ जायो ॥ ताकी डिपाय
मैसै कर को ५ ॥ कहु सो ५ चनेतर कही सो ५ ॥ तही पकडि डिलंटे बाल मूडे ॥ लां
आते लद सदार मंघु वै ॥ चमार नरी कूड पासी आए ॥ नील वस्त्र मछिता
कूछा ऐ ॥ तिस पाणी मै ताहि नुवा वै ॥ दिन चौद सो जला हो ५ जावै ॥ दोहरा ॥
दीन दीन ते ल मला ५ ॥ ओवहि पाणी नुवाय ॥ पाच वे दिन बाल मूडे ॥ जइ डि
न मदन सा ५ ॥ मैसै वो हत जात सै हो ५ ॥ पाण्डु न मदन होय सो ५ ॥ घतूरे पार
उ न मदन हो ५ ॥ ताकू सीतल वस्त्र दे सो ५ ॥ जोग पीर उ न मदन जो व्यापे ॥ जा
देर सतथा दूचति हषापे ॥ विष पार उ न मदन हो ५ ॥ कीच वेता वाद्य सपाके
को ५ ॥ तासै विष उ न मदन सा ५ ॥ और वो हत पुन करे डिपा ५ ॥ दोहरा ॥ जों
र डिपाय जव वो हकै र ॥ तव जला होय के नाहि ॥ कीच वेता वाद्य सिपि वे ॥
विष उ न मदन साय ॥ मय म हा उ न मदन विचार ॥ अव मुन म हा उ न म
द जे वाता ॥ म हा उ न मदन कह्यो वो हजाता ॥ एक गुरु रीषि सराप तै हो ५ ॥ एक

जावप्र
कास०

64

मृतदेवराक्षसी होइ ॥ एककाप्रदेवव्याधि^{सो}व्यापै ॥ एकफकीरसरापसेता
पै ॥ एकद्रव्यनाससो होइ ॥ एककाहुतुपत्र^२करीकोइ ॥ एकप्रेमकाहुकोल
जेइ ॥ २ न सोहमहाठिनमदरोगपगइ ॥ **दोहरा** ॥ माहाठिनमदमैसेव्यापै ॥ ती
कोमोषदइहोइ ॥ मुनोकहुतेमोषदे ॥ जावप्रकासकहोसोइ ॥ गुरुठिनमद
गुरुसेवाजाइ ॥ रिषसरापरिविवचनमुआइ ॥ मृतदेवठिनमदाजोहोइ ॥ मंत्रजे
त्रसेजाइवोहोइ ॥ कामठिनमादनारीसंगजाइ ॥ नाशंजोगकरैमनजाइ ॥ फ
कीरठिनमादतवजायनसाइ ॥ तुवफकीरपुसनवोहोइ ॥ दुवठिनमादद्रव्यपा
राजाइ ॥ औरताहिनहिहोतउपाइ ॥ **दोहरा** ॥ जिहद्रव्यठिनमदहो ॥ सोद्रव्यपाइत
वर्जये ॥ औरनताहिउपाइहै ॥ कहोवेद्यसजयाहि ॥ **चोपडा** ॥ प्रमठिनमादप्रे
मीमिलजाइ ॥ औरजातिकुछनाहिउपाइ ॥ दुंदंठिनमादजो^२जोकोहोइ ॥ दोदोदो
षजिहव्यापैसोइ ॥ ताकूओषदमैसेविद्यकरै ॥ तेललोआदिसवनमनचरै ॥
ओकल्याएछतकरसाइ ॥ ओठिनमतरसैमनलाइ ॥ तेललआदिगंगमदी
इ ॥ ठिनमतरसेवनायकेषाइ ॥ **दोहरा** ॥ मंडलएकलोषाइरा ॥ जोतैलगंगला
इ ॥ वातुलवस्तुछाडदे ॥ दैयठिनमादैरोगजाइ ॥ **सोरठा** ॥ कहोठिनमादैरोग
जावप्रकासकेगंगसे ॥ अपस्मारगवजोग ॥ सोअवकहोवमानके ॥

94

अथ यवानी चूर्ण चरक मतान् ॥ अवजवाय चूर्ण सुन जै सैं ॥ चरक मतैं रुचकारी
जै सैं ॥ यवयाए संहिदा डिमवी डले ॥ आहूवेर रफला तज दे ॥ घनीया सैं फजीरा पुन
दोनो ॥ समल वेत जंवली फूल लीनो ॥ सोपी पल दो सैं पुन मिचें ॥ ओर ओषद टंक दो
दो कर जै ॥ गर्धनाग सीता कूट डाले ॥ सीता सैं अघ सनाम की घाले ॥ दोहरा ॥ टंक दो
६ सद्य जल संग ॥ प्रात साहजित घाय ॥ कास स्वास पार्श्व शूल ॥ प्रीह मंदाग्नि दूषजा
य ॥ अथ यवानी चूर्ण जे ५ सार मतान् ॥ अवजवाय चूर्ण सुन जै ॥ जे ५ सारान्
षसवा ॥ जवायए रफला रकु टाली जै ॥ अजमोद तजें चव जीरा दी जै ॥ दालिची नी
येला जा सजें ॥ सनाम की चोथा जाग सधें ॥ सौचल सीघा यवा द्वार मिलावें ॥ टंक
दो ६ सद्य जल सैं घावें ॥ पार्श्व शूल प्रीह रोग ना सावें ॥ कास स्वास मंदाग्नि
जावें ॥ दोहरा ॥ छुद्याल जै रुचवो हकरें ॥ उदर विकार न साय ॥ दीपन पाचन वा
ह गुना ॥ अन्नेन स्म हो जाय ॥ अथ जवानी चूर्ण विंद सार मतान् ॥ अवजवाय
नी चूर्ण शूल ली जै ॥ विंद सार मतान् चूष पर दी जै ॥ जवाय नहर डै पी पल ले ॥
वाय विडंग मिचें चव दे ॥ आहूवेर अजमोद विडंगें ॥ रास्ता सैं फततु मा सज
धें ॥ सनाम की चोथा जाग डाले ॥ सीघा सैं चल जवा घार घाले ॥ तपू जलें संग

जावप्रका
स०

१६

टंक दोषा ॥ जो जून जून दिजो जून पछवा ॥ दोहरा ॥ कास स्वास मंद जि ॥ मूलप्री
हंदूषता ॥ असुचितो अपुन विषमता ॥ छुचा करैं वो हता ॥ अथ मालकांगणीच
जो गरुना गरमता ॥ अवमुन मालकांगणीचूर्ण ॥ योगरत्ना गरमवात सजत
ही ॥ मालकांगणी रास्ता लीजे ॥ गिलोई सतें सूंठि सों फेंदीजे ॥ आहवेर आसगंधपु
नरैला ॥ देवदारु सजु मोदक बेला ॥ सजु वाय ए सतावरी लीजे ॥ सजु समजा गलेचूर्ण
कीजे ॥ नून पंचो कुटमिलावे ॥ टंक दोष गव्य छाछि सोषावे ॥ दोहरा ॥ हाडमा समजा
गतें वात चोरासी नास ॥ कोष्ठ रोग सज ही घटें ॥ वात पित्त हरकास ॥ अथ मालकांगणी
चूर्ण विंदसारमता ॥ अवमालकांगणीचूर्ण ॥ सै सै ॥ त्रैडसारमत वात हरैं जै सै ॥ काग
लि मालुत फलात जले ॥ टकु टारास्ता सों फ गिलोई ॥ आसगंध आहवेर चवले ॥ सजु
मोद सजु वावाय ए कूटवचे ॥ सतावर ल सन गुगल पुन लीजे ॥ डलि पंच नून चूर्ण
कीजे ॥ टंक दोष गव्य घीर संगषा ॥ कै मो सरसकै घी वदचा ॥ दोहरा ॥ संधि गतें जो
वाय हो ॥ ओर संगठावको ॥ वात चोरासी नास ॥ आतपुष्ट अति हो ॥ अथ मालकांग
लि चूर्ण विंदसारमता ॥ अवमालकांगणीसूजीजे ॥ विंदसारमत वात परदेजे ॥ मा
लकांगणी सो हंजु ले जीरी ॥ नीलाबेल सन धिंका बीजु परी ॥ टफला टकु टा सों फ देवदा
र ॥ सजु मोद सजु वाय ए रास्ता डार ॥ गिलोय सतावर आहवेर लीजे ॥ कंकोल मिरच चव

१७
१८

अथ लोंगादि चूर्ण रास तारा तंत्रं ॥ अवलोंगादि चूर्ण सुन जा ६ ॥ इह हर
 रास तार वता ६ ॥ लोंगा गगर चंदन दाल चीनी ॥ कबल के सर फूल ली जैषी
 रनी ॥ त कूटा त फल वंसलोचन ले ६ ॥ कोल गीरी तनु च व पुन दे ६ ॥ अतु
 मोद ज वाय ए सा हुवे र ॥ अत्र क सार रु पर स परे ॥ सन स मो न मि श्री कूट
 डारे ॥ टंक ती न न छ ए नी त कारे ॥ **दोहरा** ॥ छ ६ का स स्था से हरे ॥ प्र मे ह क
 बल वाय जाय ॥ छु घाल गा वे वो हत पुन ॥ ओ का मी क वो हा ६ ॥ **अथ लोंगा**
दि चूर्ण कृष्ण विलास रास ॥ अवलोंगादि चूर्ण सुन जै से ॥ व स वि ला
 स प्रति वर्ण जै से ॥ लोंगा गुलाब ची तनु कं को ले ॥ रु पर स सार मं गा क ता
 व ग ले ॥ वंसलोचन व छै पुन अ ग रे ॥ त फला त कूटा ची ता त ग रे ॥ छी का
 न ग रे श्री रे वी जली जै ॥ जाय फल व स मो ले ठी दी जै ॥ चूर्ण स मो न मि श्री कू
 ट ले ६ ॥ स नाय म की आ ठ वा जा ग दे ६ ॥ **दोहरा** ॥ टंक ती न न रि सा ६ रे
 ग व दू घ सं ग प्रा त ॥ छु घ वो घ क बल दाय क ॥ हर त पित क फ वा त ॥
 ह या त व क स च ट ली ॥ स नाय १ ॥ लोंगा मा से ३ ॥ छ ड मा से ५ ॥ आ हु वे र मा से ३
 २ लाय ची मा से ३ ॥ मो घा ना गीरी मो ३ ॥ मी श्री तो ले ३ ॥ सह त = प का

कते का ह ड र ग ड के ले जा व न ह रु व ज लो हि या २ ला
 से रा १ २ व ली के पा त वा ज ड ला के पा त ॥ क थ सु पे द
 न के र पी सा व मे पी स के र ग र म के र क बी व पर को न

कते का ह ड र ग ड के ले जा व न ह रु व ज लो हि या २ ला
 से रा १ २ व ली के पा त वा ज ड ला के पा त ॥ क थ सु पे द
 न के र पी सा व मे पी स के र ग र म के र क बी व पर को न

लोहामारणवीध॥ लोहे कोरेतकरवायवेगएकुफोल रेके नरे केर उपर कप जाल परगा
राल पेट फुक दे सार मरे॥ अथ सुपरसमारण बीध॥ चादी के पत्र तथा सारा रूपे
या कु कर छनी के र समै सात वर बुझा यले पे र माक सध को कु र के कु र तावणी
माधी भरे वीच मै रुपैया या पत्र धरे उपर माक सध तर दे ४ तावणी का मुख बंध कर
के क प डी टी के रे के फुक दे रुपैया साब तर है न हारु वे के उपाव॥ आवली के पात गु
दली के पां क थ सु पे द इ क र क पि सा व मे पी स जर म कर बा व पर बा ध॥ म ग सं को च न
फ ट की मा र मो च र स चौ थी मेल घा घा मा जु फल ते मे ली ये तो चीरी सी क न जाय॥ न त्र ने को डि पा यु
का थ फल पु त मा पु र के सर वि दाल पु तुं वी जी री ना स दे॥ छी प रो गा गो व ले टंक १६
मु ली वी तु टंक १६ हल दी टंक १६ प वा ड वी तु टंक १६ इ क र कर ग डि दु घ सु ले प कर॥
दा द रोग॥ प वा ड के वी तु टंक ५ क थ सु पे द टंक ५ गं ध क ष्ठा छी या टंक ५ इ क र कर
आ व ले के पा नी मे जो ली वा ध॥ दा द॥ राल मा जु वा व ची गं ध क ष्ठा छी या
सु हां गा इ क र कर आ व ले के पा नी मे जी ली वा ध॥ ले प व र्त॥ शी र य वी न त वं टं नी ला मां श्री
हृद्रो द्य कु र व ले॥ ले प व र्त॥ दो य शां ग स छ तः प्र दू ये वि स र्म कं इ व ए दा हंत॥ सो के ले पा पु न व
दी रु रु ही मि ली कि ज मे व चा पि ष्टा चै वार ना ले न पु ले पः सर्व शो फ ती त॥ १॥ वी र

॥ वागशाश्विनां ॥ २ ॥ मयुकेवंदके ॥ ३ ॥ मल ॥
मले उपदुर्केशीं वा लकेप द्यापिन सो
दिपुलेपनं

वपु
कोसो

७८

कारीवीजो५ उजेसतैयवभारतजुचीता मावमूलसनामकीलीता दोहरा॥ सज्ज
षदसप्रजागले चूर्णकरैं जली जंति॥ उंगाकंटेहलीवासा रसरोकरेकपुटसात॥ दे
५पुटैसातसातैवारा शेरकरैकरसपुनन्यारा न्याग॥ वोहरसुकायसीताकुटडरे कपूर
नैनिगव्यघीवमोघाले॥ वहमिलायतवचूर्णमोदीजे टंकतीनत्रिप्रजाकीजे॥ स
द्यजलेंसंगप्रातसांखुघावे॥ तोवूलमघीपुनउपरचवावे॥ घुघालजेंद्विदकासन
सयपीनसजायकफरोगहराय॥ दोहरा॥ हटैरोगकंठरोसजस्वासेंदमासंधारमं
दाजिपुनविषमताकेफदोषवोहविडार॥ कपूरजीराजायफललौंगले५ सज्ज
चूर्णसुनमौसे केफहरचरकगंथकहोतैसैं कपूरजीराजायफललौंगले५ सज्ज
मोदमोचरसैंतजुदे५ लकुटाआहूबरवेरसजुवायण तगरचीतादालचीनीवकायण॥
सजैकुटचूर्णकरै॥ कपूरनैनिगव्यघीवमोघपर५ चूर्णसमानिसीताकुटिडारे टंक
तीनत्रिदणनितकरै॥ दोहरा॥ दोयीकासकंठरोगहर स्वासपीनससंधार॥ रुचका
रीअधिक्कैवना घातुपूषवलकार॥ कपूरमोचरसकालाजीराजायफललौंग
सुनवपीनवनीतगंथकहोविष्णाता कपूरमोचरसकालाजीराजायफललौंग
हेलावीजुवीरा॥ नागकेशरिलकुटातजुले५ चूर्णसमानिमिष्रीकुटिदे५ कपूरनैनि
गव्यघीवमोलीजे घीवघाणिचूर्णमोदीजे॥ टंकतीनत्रिजलसंगघा५ उपरिमधुपान
चवा५ दोहरा॥ ददकंठकासस्वासर पीनसदो५दुमघात॥ घुचवोधिक्कैवना कामपुष्टवि

त्रावपु
कासो

सद्य जल सोषाय प्रात पुन संद्य वात पित्त कफ रोग जे द्वादस्वा सहर कां द्य ॥ सद्य
लेंगा दिच वेंगा ज्ञात ॥ सवलेंगा दिचूर्ण जल कहें ॥ द्वादस्वा ज्ञात तेंल हें ॥
लेंगा चंदन सगरें क सुरी ॥ ज्ञाय फल वंसलो चन वज्र ॥ कवल के सर ना ग के
सरले ॥ ऐला तीरा के कोल स दे ॥ त फली त कुटा सो फ वि डं जे ॥ सा हूवर त ग रें त ज
मं जें ॥ त्राव त्री दाल ची नी जें ॥ छ ड ची ता स त्र मो द च व दी रे ॥ दोहरा ॥ पान जे डें
मो ले ही स नें जे डें कं ट कार ॥ वा सा त्र डं सा क फूल ले उं गा त्र डें य व धार ॥ सत्र स्रो व द
ले चूर्ण करी जे ॥ एते र सो म छा पु ट हं दी जे ॥ वं सा उं गा कं ट कारी पाने ॥ छ ह छ ह पु ट रे क रे क
र स ठाने ॥ पान पु ट पा छ सो दी जे ॥ चूर्ण स मान सी ता कू ट ली जे ॥ लेंगा सो दू नां जे गा के पु न
डारे ॥ सत्र क सार लेंगा स म डारे ॥ टं क ती न नित प्र त जे धा ॥ द्वायी का स स्रो स्वा स न सा ॥
दोहरा ॥ मं द जि प्र मे ह दु व ॥ जल ग्र ह पी न स नी वार ॥ छ द्या ल गां वे वो ह त पु न व ल दाय
क स पार ॥ सयल वं गा दि चूर्ण चर कत ॥ सवल वं गा दि चूर्ण सु न सै सै ॥ छ द्य वो घ क
चर के क ह्यो जे सै ॥ लेंगा द ला य ची त ज च व ले ॥ ज्ञाय फल दाल ची नी व स दे ॥ त कू टा
के को ल मी च पु न डारे ॥ रु पा सू ना सत्र क पु न सरें ॥ सत्र स मान मि मी कू ट ली जे ॥
टं क ती न सद्य जल सो दी जे ॥ सा त दो स ल ग नित प्र त धा ॥ द्वाद का स स्रो स्वा स न सा ॥ दोहरा ॥
छु व वो घ के का म क घ ना ॥ वल दाय क पु न जो र ॥ सू ल ह दै रोग क फ दु घे ॥ रक्त पित्त वा य जो र ॥